Choropleth Method

वर्णमात्री (Choropleth) शब्द अंग्रेजी पर्यायवाची शब्द ग्रीक भाषा के Choros (स्थान) तथा Plethos (माप) शब्दों से मिलकर बना है तथा इसका सामान्य अर्थ क्षेत्र में मात्रा (quantity in area) होता है। इस प्रकार वर्णमात्री या छायित मानचित्र (Shading map) में भिन्न-भिन्न घनत्व वाली छायाओं के द्वारा किसी वस्तु की प्रति इकाई क्षेत्र औसत संख्या या प्रतिशत मूल्य जैसे जनसंख्या का प्रतिवर्ग किलोमीटर घनत्व कृष्य भूमि (cultivated land) का प्रतिशत विभिन्न राज्यों में प्रति व्यक्ति राष्ट्रीय आय अथवा किसी फसल का भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में प्रति हेक्टेअर उत्पादन आदि प्रदर्शित किया जाता है चूँकि प्रशासनिक क्षेत्रों के आधार पर सांख्यिकीय आँकड़े को प्राप्त करना सरल होता है अतः वर्णमात्री मानचित्र बनाने के लिए प्रायः राज्यों, जनपदों, तहसीलों, विकास-खण्ड एवं अन्य क्षेत्रों की इकाई क्षेत्रों के रूप में चुना जाता है।

दूसरे शब्दों में, इन मानचित्रों में घनत्व आदि की भिन्नता को राजनैतिक अथवा प्रशासनिक क्षेत्रों के आधार पर दर्शाया जाता है।

ऐसा करने के फलस्वरूप वर्णमाली मानचित्र में दो प्रकार के दोष पाए जाते है।

प्रथम :- उन मानचित्रों का घनत्व वाले क्षेत्रों को प्रशासनिक सीमाओं के द्वारा एक दूसरे से विभक्त दिखलाया जाता है। जो एक अस्वभाविक बात है क्योंकि राजनीतिक व प्रशासनिक सीमाएँ अस्थायी होती है तथा यह आवश्यक नही है कि घनत्व-क्षेत्रों की सीमाएँ प्रशासनिक सीमाएँ का अनुसरण करें। यही कारण है कि कभी-कभी ये कृत्रिम सीमाएँ एक ही प्रकार के क्षेत्र को कई भागों में बाँट देती है अथवा भिन्न भिन्न घनत्व वाले क्षेत्रों को मिलाकर एक प्रशासनिक क्षेत्र बना देती है।

द्वितीय :- वर्णमाली मानचित्र बनाते समय यह मान लिया जाता है कि किसी प्रशासनिक क्षेत्र में घनत्व की मात्रा सर्वत्र एक समान है परन्तु ऐसा मान लेना त्रुटिपूर्ण है क्योंकि जैसा ऊपर बताया गया है एक ही प्रशासनिक क्षेत्र में भिन्न-2 घनत्व वाले क्षेत्र हो सकते है।

Scanned by SelfScan

वर्णमिजी मानचित्र बनाने के लिए सर्वप्रथम विभिन्न राज्यों आदि के अनुसार दिये गये आँकड़ो को आरोही या अवरोही क्रम मे व्यवस्थित करते है। इसके पश्चात किसी उचित अन्तराल पर आकड़ो मे बाँट देते है। जैसे 0-10, 10-20, 20-30 आदि के स्थान 0-9, 10-19, 20-29 के समान पद्धति अपनाई जानी चाहिए क्योंकि वर्णमिजी मानचित्रो मे छायाओं के परिवर्तन से घनत्व रेखाओ के बजाए सीमा रेखाओं का बोध होता है।

मूल्यों के बढ़ने के साथ साथ छायाओं में भारीपन बढ़ता जाना चाहिए जिससे मानचित्र को देखने मात्र से विभिन्न क्षेत्रों का तुलनात्मक महत्व समझा जा सके। इस प्रकार सबसे कम घनत्व वाले क्षेत्र मे सबसे हल्की छाया, उससे अधिक घनत्व वाले क्षेत्रों मे भारी छाया तथा सबसे अधिक घनत्व वाले क्षेत्रो मे सबसे भारी छाया भरी जाती है।

मानचित्र मे प्रयुक्त सभी छायाओं का संकेत मे दिखलाना आवश्यक होता है।

Scanned by SelfScan

⟹ इस तरह हम उदाहरण से समझते है –

राज्य	घनत्व	राज्य	घनत्व
दिल्ली	4,178	तमिलनाडु	371
चण्डीगढ़	3,948	पंजाब	33।
लक्षद्वीप	1.257	हरियाणा	291
पांडिचेरी	1,228	गोवा, दमन, दि	284
केरल	654	असम	254
पश्चिमबंगाल	614	दादरनागर	211
बिहार	402	महाराष्ट्र	204
उत्तरप्रदेश	377	त्रिपुरा	196

क्रमांक	प्रतिवर्ग किलोमीटर	
01	400 – से अधिक	– दिल्ली, चण्डीगढ़ लक्षद्वीप, केरल, बिहार
02	301 – 400	– उत्तरप्रदेश, तमिलनाडु पंजाब
03	201 – 300	– हरियाणा, गोवा, असम, दमण दीव
04	101 – 200	– त्रिपुरा, आन्ध्र गुजरात उड़ीसा
	101 – से कम	– मिजोरम, अरुणाचल अण्डमान निकोबार

Scanned by SelfScan

Ajanta
Page No.
Date

अब इस समूहों की भाँति राज्यों के उपरोक्त पाँचों समूहों को भिन्न-भिन्न घनत्वों वाली छायाएँ भरकर स्पष्ट कीजिए – यहाँ यह पुनः संकेत किया जाता है कि जिस प्रकार विभिन्न समूहों में भरी जाने वाली छायाओं की सघनता भी कम होनी चाहिए।

Scanned by SelfScan